GYANBODH

ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 3
Special Issue: 1
July: 2025

रूपक में समाज जीवन 'मृच्छकटिकम्'

भारती त्रिवेदी

शोध छात्र

संस्कृत विभाग

श्री गोविन्द गुरु युनिवर्सिटी,गोधरा

भूमिका

मृच्छकटिकम् की वस्तु लोकसंश्रययुक्त हैं। आज की भाषा में कहा जाए तों मध्यमवर्ग आमजनता और क्रान्ति का रूपक हैं। मृच्छकटिकम् की विशेषता उसमें मूर्त होते हुए जनजीवन में हैं। शूद्रक के - शब्दों में कहिए तो मृच्छकटिकम् की कथावस्तु एक सामाजिक जीवन में वर्णित घटनाओं पर आधारित हैं। सिद्धान्त के अन्वय कोई भी देशके भाषा क -जीवन का प्रतिबिम्ब है। साहित्य-साहित्य समाज ा साहित्य महत् अंश में समकालीन सामाजिक परिस्थिति के प्रतिबिम्ब बिना रह नहीं शके। इस तरह शूद्रक भी मृच्छकटिकम् रुपक में समाजजीवन की प्रतीति करवाता है। अलबत्त यह प्रतिबिम्ब के उठाव में वह - साहित्य कृति के सर्जन के पीछे उसका सर्जन अपने चित्त में अवधारित किया हुआ उद्देश बढिया भूमिका निभाते हैं। साहित्य कृति सम्पूर्णतः सामाजिक होती है। यानि कि उनके सर्जक में सामाजिक स्तर जब आधारित ऐसा कथानक पसन्द किया हो तो समकालिन सामाजिक स्थिति के प्रतिबिम्ब का उठाव स्पष्ट और सुरेख बना। किन्तु साहित्यिक कृति मुख्यत्वे सामाजिक न हो यानि कि उसकी कथावस्तु कोई राजकिय धार्मिक के पौराणिक स्तर पर आधारित हो तो अवश्य समकालीन सामाजिक परिस्थिति का प्रतिबिम्ब पहले पसन्द हुए कथावस्तु के लिए आवश्यक और पोषक हो एसी मात्रा में ही कृति में प्रतिबिम्बत होता है और उसका मूल्यांकन भी कृति के एक, मुख्य अथवा आनुषंगिक अंश के रुप में होता है।

संस्कृतसाहित्य और उसमें भी नाटक के बजूद चर्चा को मर्यादित रखा जाए तो भारपूर्वक और - कोई अतिशयोक्ति के भय बिना ऐसा कहाँ जा सकता है कि शुद्ध अथवा सम्पूर्ण रुप सामाजिक ऐसे नाटक उपलब्ध नहीं है।

मृच्छकटिकम् में समाजजीवन

नाटक शब्द से सुदीर्घ ऐसी नाट्यकृति अभिप्रेत है। ऐसा समझकर देखा जाए तो शूद्रक कवि का मृच्छकटिकम् ही एक ऐसा सम्पूर्णतः रुपक सामाजिक कहाँ जा सकता है। महाकवि भास के 'चारुदत'

ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 3
Special Issue: 1
July: 2025

नाटक के साथ मृच्छकटिकम् का विवादास्पद सम्बन्ध को मद्दे नजर रखकर इतना ही विवक्षित है कि यह चर्चा के सन्दर्भ में चारुदत्त नाटक का मृच्छकटिकम् में समावेश हो जाता है। समकालीन सामाजिक परिस्थिति का उच्च, मध्यम एवं नीम्न ऐसे सभी स्तरों का एवं मानव स्वभाव के उदात्त और हीन अंशो का सम्पूर्ण सांगोपांग और वास्तवनिष्ठ आलेखन हमको उसमें दिखाई देता हैं। अतः मृच्छकटकिम् को संस्कृत साहित्य में रुपको के एक आदर्श प्रतिनिधि रुप स्वीकारा गया है।

सब से पहले इस रुपक की कथावस्तु ही हम सभी को प्रणालिकाभंजन के एक प्रगल्भ फिर भी -सुन्दर प्रयत्न के रुप आकर्षित कर रहा है।-सफल

अवन्तिपुय्या द्विजसार्थवाहो युवा दरिद्रः किल चारुदत्तः।
गुणानुरक्ता गणिका च यस्य वसन्तशोभेव वसन्तसेना।।[4]

उपर्युक्त शब्द में कहाँ जाए तो नाटक के प्रारम्भ में ही सूचन है वैसे असामान्य रीत से धनाठ्य और इतनी ही असामान्य रीत से सौन्दर्यवती एक गणिका वसन्तसेना और भौतिक द,टि से दरिद्र फिर भी गुण सम्पत्ति की दृष्टि से सुसमृद्ध ऐसे एक ब्राह्मण चारुदत्त बिच के अन्त में दाम्पत्य मंगल में परिवर्तित, कौतुक प्रिय और रंगदर्शी प्रणय की कथा का आलेखन उसमें किया गया है। किन्तु प्रणय की कथा के फलक पर कविने समाज के उच्चावच अनेक स्तरों की वैविध्यसभर पात्रसृष्टि प्रस्तुत की है कि नाटक को सम्पूर्णतः देखकर लगता है कि मनु,य के सामाजिक जिवन का एक वास्तवपूर्ण और हृदय स्पर्शी दर्शन प्रस्तुत किया है।

➔ उज्जयिनी एक पंचरंगी बस्ती का शहर था। वहाँ व्यापार बडीया चलता था। वणिको का दरिया में भी व्यापार होता था। युवा पेढी अन्य देश को देखने के लिए अपने घर का त्याग करते थे। वहा के लोग भिन्नअलग भाषाओं का उल्लेख भी करता है। -भिन्न भाषाए जानते थे चन्दनक अलग-शर्विलक भी तरह तरह की भाषा जानता था। शहर में सभी लोग अमीर थे। राजमार्ग थे किन्तु बारीश की वजह से कादव हो जाता था। रस्ते पे भीड भी बहुत रहती थी। रस्ते पे वाहन, गाँव की बैलगाडीयाँ, धनवानों की बंध गाडीयाँ फिरती रहती थी। रात को विलासी लोग आनन्द मनाते थे गणिकायें भी रात को घूमने नीकलती थी। दिन में भी मारामारी गाली बोलते थे और खुन-, चोरी इत्यादि होता रहता था।

[4] मृच्च्छकटिकम्1.6 -

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 3
Special Issue: 1
July: 2025

तयोरिदं सत्सुरतोत्सवाश्रयं, नयप्रचारं, व्यवहारदुष्टताम्।
खलस्वभावं, भवितव्यतां तथा चकार सर्वं किल शूद्रको नृपः।।[5]

उपर्युक्त श्लोक में कवि राजाशूद्रक अपने ही निखालसता से प्रस्तुत करते हैं कि ये दर्शन की प्रस्तुतता में स्वाभाविकता लाने के लिए कवि नाट्यशास्त्र के परंपरागत और गूठ नियमों के बन्धन का तिरस्कार करने से भी अचकातें नहीं हैं।

दुर्वणोऽसि विनिष्टोऽसि दशस्वर्णस्य कारणात्।
पञ्चेन्द्रियसमायुक्तो नरो व्यापाद्यते त्वया।।[6]

तुम नीम्र कुल के हो। तुम्हारा विनाश हो गया है। दशमहोर के लिए पांच इन्द्रिय वाले मनुष्य -सोना- का संहार करता है। जैसेशब्दो से शुरु होकर गली में रोजबरोज झगडे और गरमा गरम गालीयों से मारा-मारी होती रहती थी।

काम नीचमिदं वदन्तु पुरुषाः स्वप्ने च यद्वर्द्धते,
विश्वस्तेषु च वञ्चनापरिभवश्चौर्यं न शौर्यं हि तत्।
स्वाधीना वचनीयतापि हि वरं बद्धो न सेवाञ्जलि;
भार्गो ह्येष नरेन्द्रसौप्तिकवधे पूर्वं कृतो द्रौणिना।।[7]

सोते हुए लोगो को भी नीच कहाँ है किन्तु विश्वासपात्र मनुष्य के साथ कपट करना भी चोरी मानी जाती थी। वास्तव में वह शौर्य नहीं है। किन्तु निन्दा भी अच्छी गीनी जाती थी। सेवा में जूडे हुए हाथ नहीं। सोते हुए नृप का वध जिस तरह अश्वत्थामाने किया था उसी तरह निन्दनीय कहाँ जाता था। वह शब्द में शौर्य प्रशस्ति करकर रात को दिवाल भेदकर चोरी करनेवाले धंधेदार चोर की साहसलीला, सुन्दर फिर भी असहाय युवती के गले को दबोचकर नरपिशाच की निर्दयताः वधस्तंभ पर ले जाने वाला निर्दोष नायक के द्दश्य में मर्मभेदक किन्तु सम्पूर्णतः मानवसहज दारुणता, और प्रज्वलित अग्नि में प्रवेश करने के लिए दोडती गुणियल पवित्रता का वह प्रसंग की करुणता। ये सभी अंश के जीवित समकालीन सामाजिक जीवन में से गहन कला के साथ बानी से कवि ने नायकनायिका की मुख्य प्रणयकथा के साथ ऐसी- कुशलता के

---

[5] मृच्छकटिकम्1.7 -
[6] मृच्छकटिकम्2.13 -
[7] मृच्छकटिकम्3.11 -

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 3
Special Issue: 1
July: 2025

साथ जोड दिया है कि पहले पोत भी घट्ट बनता है फिर भी उसके साथ नयनरम्य रङ्ग के साथ चित्रविचित्र - चितरामण भी उसमें शोभायमान होता है।

➔ यह नाटक की पात्रसृष्टि भी संस्कृत नाटक परपराग्रस्त रङ्गभूमि पर एक नये किरण- के साथ और संस्कृत नाटक में कम दिखने मिलती विरल रीत दिखाई दे रही है।

संस्कृत नाटक में बहुत कम समाज के उच्च स्तर में से संस्कारी और सुरक्षित पात्र देखने मिलते है। चित्रण भी आदर्शों के चीलाचालु रङ्ग में किया जाता है। नीम्न स्तर के -इतना ही नहीं किन्तु उसका चरित्र परिचारक, कञ्चुकी, दासदासीयाँ इत्या-दि उसमें होते हैं। किन्तु ये सभी पात्र पहले मुख्य कथावस्तु के - विकास के लिए कविने हेतुपूर्वक प्रस्तुत निर्जीव साधनों जैसे दिखाई देते हैं।

इसलिए ही शाकुन्तल के छठ्ठे अंक में प्रवेशक में कालिदास जैसे सिद्धहस्त कवि जब मच्छीमार और पुलिस अधिकारी के बीच के प्रस◌ंग का निरूपण करते हैं तब सहृदयों को उसमें नावीन्यता और असामान्य दर्शन होने के आनंद की अनुभूति होती है। अतः यह प्रकरण में ऐसे पात्र और प्रसंगो की एक अलग ही अभिनव सृष्टिगोचर होती है। शकार का नोकर स्थावरक को ही देखोना। ये बिचारे सीधे सादे-, भोले...-भाले भगवान के मानव है। किन्तु प्रसंगोपात अपने स्वामी को कहने से भी नहीं गभराते जैसे कि-

प्रबवतु भट्टकः शरीरस्य न चारित्रस्य।

ताडयतु भट्टकः किन्तु अकार्यं न करिष्यामि।।

और चारुदत्त जैसे एक निर्दोष सज्जन को मृत्यु के मुख में से निकालने के लिए महल के सातवें कमरे की बारी में से कहकर नीचे की गली में अपने शरीर को धकेलने के लिए भी "आत्मनं पातयामि" गभराट का भी अनुभव नही करता।

"वरं अहं उपरतः न पुनः एषः कुलपुत्र विहगानां वासपादयः आर्यचारुदत्तः।"

मदनिका वैसे तो एक गणिका की दासी है। किन्तु उसका आभिजात्य ऐसा विस्मरणीय बन गया है। अपनी जात को दास्य में से छुडवाने के लिए उसका प्रियतम आभूषणो चूरा कर लाता हैं वही आभूषण उसकी रानी प्रत्येकी निष्ठा के कारन

"तस्य एव आर्यस्यसम्बन्धी भूत्वा इमं अलङ्कारकं आर्यायाः उपनय।"

ऐसा बोलकर परत आ जाते हैं। और ऐसे ही अपने मूक्तजीवन के लिए एकमात्र तक को भी ठुकरा- देते हैं।

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 3
Special Issue: 1
July: 2025

चारुदत्त को वधस्तंभ पर ले जाने से पहले दो चांडाल को भी मनुष्य की जिन्दगी के लिए श्रद्धा और .संहिता का अनुसरण करते हैं।-सन्मान है। उसके ऐसे नीम्न स्तर के व्यवसाय के बीच भी स्वकीय आचार इसिलिए ही उसका वध करना ही चांडाल का धर्म है। ऐसे वध्यपुरुष चारुदत्त की क्षमा मांगना चांडाल को उचित लगता है। और कहते है कि....

आर्य चारुदत्त", स्वामिनियोगः अत्र अपराध्यति।"

क्रान्ति कि चलवल के नेता शर्विलंक अपनी प्रियतमा को दास्य में से छुडवाने के लिए

अहं हि चतुर्वेदविदः अप्र"ितिग्राहकस्य पुत्रः

शर्विलको नाम ब्राह्मणः गणिकामदनिकार्थं अनुतिष्ठामि।।"

ऐसे शब्दो के साथ चोरी करने के लिए आभूषणों की चोरी से भी शर्म नहीं आती।

कालिदास ने सिंहशिशु के साथ स्वाभाविक क्रिडा करते बालक सर्वदमन के आकर्षण का आलेखन किया है। भवभूति ने भी लव की निर्दोष चपलता का आस्वाद्य दर्शन करवाया है। किन्तु रदनिके एसा कहकर मृच्छकटिक की माटी "किं मम एतया मृत्तिकाशकटिकया तामेव सौरवर्णशकटिकां देहि।।" की गाली को फेंक देता है। और धनिक पडोशी के बालक की सुवर्ण की गाडी देखकर रडनेवाले चारुदत्त के पुत्र रोहसेन के कारुण्य में कलापूर्ण स्पर्श है। बालस्वभाव के लाक्षणिक मनोविज्ञान की -ताजगी उसमें दिखाई देती है वह सच में अपूर्व है।

चारुदत्त का मित्र मैत्रेय वैसे तो रुपक के हास्यरस का पात्र है। किन्तु विदूषक यानि कि कदरुप, लोभी, भूलकड ऐसी व्याख्या में कैद शूद्रक ने मैत्रेय को मूक्त किया है। और मित्र के लिए प्राण अर्पण करनेवाला बताया है। विदूषक चांडाल को कहता है कि....

" भद्रमुखौ मुञ्चतं प्रियवरस्य चारुदत्तम्। मां व्यापादयतम्।"

किन्तु शुद्रक की सबसे बडी उपलब्धि जो कोई हो तो वो है शकार का पात्रालेखनउसकी ज्यादा से ज्यादा मूर्खता, अधमकोटि की विलासवृत्ति, पाशवी लोभवृत्ति, अत्यन्त दुष्टता, निर्गुण नीम्नता, निर्लज्ज दीनता ये सभी दुर्गुण के यथातथ आलेखन के कारण शकार का पात्र समग्र संस्कृत साहित्य में अजोड रहा है।

किन्तु यह सब पात्रो की सविस्तार उल्लेख शुद्रक की पात्रालेखनकला के निरुपण के लिए नहि किया गया किन्तु यह सब पात्रो के हलके माध्यम द्वारा उसके सर्जक कविने समकालीन सामाजिक स्थिति का दर्शन करवायाँ है।

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 3
Special Issue: 1
July: 2025

यहि यहाँ पे महत्व की बात है। समकालीन समाज के दर्शन में वर्णव्यवस्था की स्थिरता और ब्‌राह्मणों का वर्चस्व स्पष्ट रुप से दिखाई देता है।नव वें अङ्क में न्यायधीश ने ब्राह्मणों का वर्चस्व स्वीकार करते हुए कहाँ है कि...

अयं हि पातकी विप्रो न वध्यो मनुरब्रवीत्।

राष्ट्रादस्मात्तु निर्वास्यो विभेवेरक्षतैः सह।।

वास्तव में यह पापी ब्राह्मण हैं। मनुने कहाँ है कि उसको मारना नहीं चाहिए सभी समृद्धि के साथ राष्ट्र से निकाल देना चाहिए। वह समाज में स्त्रीयों को तीन वर्ग देखने मिलते हैं। कुलवधू, प्रकाशवारी अथवा गणिका और भुजिष्या यानि की दासी। सामाजिक अनिष्टों में से द्यूत यानि कि जुगार वह जमाने में बहुत ज्यादा खेला जाता था। द्यूतकारो का व्यवस्थित मंडल था। द्यूत का मुख्य व्यक्ति था वो सभिक नाम से जाना जाता था। किन्तु आश्चर्य कि बात तो यहा है कि द्यूत वो जमाने में दुर्गुण नहीं माना जाता था। क्योंकि चारुदत्त ने द्यूत में अलङ्कर गवायाँ है उसका एकरार करते हुए वसन्तसेना को कहता है।

"भोः द्यूतं हि नाम पुरषस्य असिंहासनं राज्यम्।"

ऐसा कहकर द्यूत की प्रशंसा करता है। शर्विलक जिस तरह चोरी करता है वह देखकर चोरी करने का व्यवस्थित शास्त्र अपने समक्ष द्दष्टिगोचर होता है। गुलामी की प्रथा एक सामाजिक अनिष्ट के स्वरुप में स्थिर होती हुई दिख रही है।

दारिद्र्यान्मरणाद्वा मरणं मम रोचते न दारिद्र्यम्।

अल्पक्लेशं मरणं द्वारिद्र्यमनन्तकं दुःखम्।।

दारिद्र के मृत्यु में से मृत्यु अच्छी है दारिद्र्य नहीं, मृत्यु थोडा क्लेश देनेवाली है जबकि दारिद्र्य अनन्त दुःख है। जैसे शब्द में दारिद्र्य की निन्दा की गई है।

शूद्रक ने भले ही मुख्य प्रणयकथा चारुदत्त पर से ली हो किन्तु उसमें जीवन का ही वास्तविक भाग हमारी समक्ष प्रस्तुत किया है। उसके पात्र भी जीवित मनुष्य है इतना ही नहीं किन्तु हर एक पात्र का अलग-अलग व्यक्तित्व है एवं इस समय की सामाजिक जीवन प्रणाली के दर्शन करवाती है उसमें ही शूद्रक की मौलिकता का दर्शन होता है।

GYANBODH

ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 3
Special Issue: 1
July: 2025

सन्दर्भग्रन्थः

.1 मृच्छकटिकम् शूद्रक -,
प्रकाशकवोरा .के .ऐम् -, वोरा ऐंड कंपनी,
पब्लिशर्स प्रायव्ह)ेटलि ३ राउंड बिल्डिंग (,
काळबादेवी रस्ता,मुंबई २

.2 संस्कृत साहित्य का इतिहास
डॉकपिलदेव द्विवेदी .,
प्रकाशक रामनारायणलाल विजयकुमार -
२, कटरा रोड,इलाहाबाद २११००२-

. 3 अभिज्ञानशाकुन्तलम् महाकवि कालिदास -
सम्पादक वासुदेवकृष्ण चतुर्वेदी -
महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा

.4 उत्तररामचरितम्भवभूति -,
प्रकाशक रामनारायणलांल बेनीप्रसाद,
इलाहाबाद२११००२१ चतुर्थ संस्करण-

.5 आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास श्री राधावल्लभ त्रिपाठी -